पद ६१

(राग: झिंजोटी - ताल: दादरा)

वाचे भीम भीम भीम बलभीम वदा रे।।ध्रु.।। बलभीम करतां ध्यास होतो पातकांचा नाश। कांपतसे काळ त्यास छेडिना कदा रे।।१।। भीमठायीं मन धरुनी बैसे काणी ध्यान धरुनीं। येऊनि वारी त्याजवरुनि हातिंची गदा रे।।२।। माणिक म्हणे बलभीम चार अक्षरांचे नाम। जपतां पूर्ण करी काम नेतो ब्रह्मपदा रे।।३।।